DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – I
Subject – Sanskrit
Paper – I

5×3=15 Marks

कारक-सूत्र-व्याख्या

चतुर्थी विभक्ति

16. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1/4/32)

व्याख्या— दान के कर्म द्वारा कर्ता जिसे सन्तुष्ट करना चाहता है, वह पदार्थ सम्प्रदानसंज्ञक होता है और उस अनुक्त सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। यथा— विप्राय गां ददाति— ब्राह्मण को गाय देता है। यहाँ देवदत्तादि कर्ता दान के कर्मभूत गौ से विप्र को संतुष्ट करना चाहता है, इसलिए विप्र को 'कर्मणा यमभिप्रैति०-सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' से चतुर्थी हुई। क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध करना इष्ट हो, वह भी सम्प्रदानसंज्ञक होता है। यथा— पत्ये शेते —पति के लिए सोती है। यहाँ शयन क्रिया के साथ पति का सम्बन्ध जोड़ा गया है अर्थात् नायिका पति को अनुकूल बनाने के निमित्त सोती है, अतः 'क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्'- वार्तिक से पति को सम्प्रदान संज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने से चतुर्थी हुई।

— 0 —

क्रमशः जारी